भारतीय दर्शन में कर्म की अवधारणा

डॉ. अरूण कुमार सिंह

भारतीय विचारधारा प्रभाव से ही कर्मवाद की प्रबल समर्थक रही है। ऋग्वेद में हम ऋत का वर्णन पाते हैं। ऋत इस जगत में पायी जाने वाली नैतिक व्यवस्था का नाम है। जगत में सबसे पहले ऋत ही उत्पन्न हुआ है। सत्य की उत्पत्ति उसके बाद में हुई। इस नैतिक व्यवस्था का अर्थ है, प्रत्येक व्यक्ति कर्म करने के लिए स्वतंत्र है। उसे अपने कर्मों के अनुरूप ही फल प्राप्त होते हैं। इस ऋत को हम आधुनिक काल के प्रकृति की एकरूपता का सूक्ष्म रूप कह सकते हैं।